Shodhpith
International Multidisciplinary Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)
Volume: 1 Issue: 4 July-August 2025

अशोकक कथा–साहित्यक परिवेश एवं समाज

डॉ0 श्वेता कुमारी

शोध छात्रा, मैथिली विभाग, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय पूर्णियाँ, पूर्णियाँ

एकटा विशाल देश अछि। देशमे अनेको प्रान्त अछि। सभ प्रान्तमे मारिते रास प्रमंडल जिला– अनुमंडल– प्रखंड आ गाम–पंचायत अछि। हरेक गाम समाजक अपन फराक–फराक परिचिति अछि। कोनो गामक सीमाक मुहान पर विशाल पीपरक गाछ अछि, कोनो गामक मुहानपर ईंटाक बनल विशाल तोरण द्वार। हरेक गामक प्राकृतिक बनावट सेहो अलग–अलग अछि। कोनो गाममे हरियर–हरियर गाछ–पात अधिक अछि तँ कोनो गाममे बालु–सीमेंट आ ईंटासँ बनल पैघ–पैघ अट्टालिका। गामक बनावट अलग भ' सकैत अछि, कएक ठाम लगितो छैक, मुदा एकटा जे प्रमुख तत्व अछि ओ थिक– सामाजिक असमानता, जीवनक यथार्थ मूलक अवमूल्यन, पारिवा. रिक छिन्न–भिन्न अवस्था, सभ प्रकारक सम्बन्धमे अनास्था–भाव, सामाजिक आधारशिलाक विकेन्द्रीकरण, राजनीतिक प्रपंच, प्रशासनिक अकर्मण्यता, बेकारी, भ्रष्टाचार ई थिक हमरालोकनिक परिवेश, जे प्रत्येक गाम–समाजक लेल एक्के रंग अछि। मैथिली कथाकेँ जाहि परिवेशक इर्द–गिर्द घुमबाक छैक से उपरिवर्णित अछि । एहन परिवेशमे आजुक कथाक कथानक बाहर नहि घटैत अछि; व्यक्तिक भीतर घटैत अछि, कारण वर्तमान कालीन कथा जीवनकेँ छुबिक' भाव नहि छोड़ि दैत अछि, अपितु जीवनकेँ उनटा–पुनटाक' देखैत अछि । सूक्ष्मतापूर्वक अन्वेषण करैत अछि । सामाजिक प्राणीक मोनक भीतर प्रवेश क' मानव–मनक गीरहकेँ खोलैत अछि। वर्तमान कथाक श्रेष्ठता ओकर समग्र प्रभावक अंकनपर सेहो निर्भर करैत छैक। कथाक संरचनामे कथाकारक जीवनानुभव सूक्ष्मदर्शिता, संवेदनशीलताक महत्व अधिक अछि, जाहि बलेँ कलात्मक रूपसँ मार्मिक प्रसंगक उपस्थापन क' पाठककेँ प्रभावमे आनल जा सकय। कथा–साहित्य मानव–मोनकेँ आनन्दित आ आकर्षित करबाक लेल एकटा प्रमुख साधन थिक। एहि मादेँ डा. रमानन्द झा 'रमण' अपन पोथी 'मैथिली कथाक धाप'मे लिखलनि अछि–

''मानव भावाभिव्यक्तिक दूटा महत्वपूर्ण साधन अछि– गीत आ कथा। कथामे लोक अपन आ अपन समाजक छवि देखैत अछि। विषाद एवं यंत्रणा देखैत अछि, आशा–आकांक्षा देखैत अछि, हँसब आ बाजब देखैत अछि। गीत गाबि आ सुनि लोक आनन्द–विभोर होइत अछि। सुख–दुख बिसरैत अछि। तबधल मोन जुड़ाइत छैक। गीत आ कथाक इएह लोकानुरंजकता लोककेँ अनादिकालसँ आकर्षित करैत आयल अछि।''[1]

कथाकेँ सामाजिक परिचिति दियेबामे सर्वप्रमुख तत्व थिक–परिवेश। कथाकार परिवेशक चित्रणक बलपर जन–सामान्यक दुख–द. न्यक मार्मिकसँ मार्मिक चित्र उपस्थापित क' दैत छथि। विभिन्न विद्वानलोकनिक मानव छनि जे कथा आ कथा–कौशलमे भिन्नता अछि। जतय एक दिस कथाकेँ विषय–वस्तुसँ सम्बद्ध मानल गेल अछि, ओतहि दोसर दिस कथन–भंमिाक सेहो विस्तृत महत्व देल गेल अछि। एकटा कथामे ई दुनू तत्व मिलिक' प्रभाव उत्पन्न करैत छैक। मुदा वाचन–कलाक जतय प्रदर्शन करबाक छैक– ओतय, वाचकक आंगिक आ वाचिक भंगिमाक प्रमुखतासँ महत्व देल जाइत छैक, तहिना, जतय मात्र पाठकक लेल प्रस्तुत करबाक छैक ओतय शाब्दिक व्यापारक प्रमुखता छैक। साहित्य समाजक उपज थिक। एकटा सामाजिक प्राणीक सर्वांगीण विकासक परिकल्पना साहित्यक विना नहि कएल जा सकैए। एहि सन्दर्भमे मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार अशोक निम्नालिखित उद्धरण समयोचित आ यथार्थ अछि–

''साहित्यसेवा समाज सेवा थिक। साहित्य–कर्म सामाजिक कर्म। एवं समाजमे साहित्य कोनो भूमिका नहि अछि त' ओकर कोनो जरूरतो नहि अछि। साहित्य समाजसँ कटिक' नहि रहि सकैए आ ने भ' सकैए। एही कारणे समाज आ साहित्यक सम्बन्धमे एम्हर विशेष चिन्तन आ मनन कएल जा रहल अछि। एही चिन्तनक आधारपर साहित्य आ साहित्यकारक भौतिक सत्ता अछि।''[2]

अशोक मैथिली साहित्यक एकटा प्रमुख कथाकार भेलाह अछि। हिनक कथाक परिवेश–निर्माण बेछप होइत छनि। तकर कारण इएह थिक जे कथा–रचना जे हुनक अभिप्राय छनि से कतिपय अन्य रचनाकारसँ एकदम फराक। शिवशंकर श्रीनिवासक कथाक परिवेश–निर्माण सेहो बहुत सघन आ अभेद्य छनि। मैथिली कथा–साहित्यमे अशोक अपन खास रचनात्मकताक लेल ख्यात छथि तँ शिवशंकर श्रीनिवास गामक सुगन्धिकेँ विखरित कए समग्र वातावरणकेँ सोन्हगर गामसँ महोमहो क' देबयवला। मैथिली कथा–साहित्यमे अशोक आ कि शिवशंकर श्रीनिवासक समानान्तर अन्यो कएकटा कथाकार छथि जे परिवेश चित्रणक बलपर कथा–साहित्यकेँ आम पाठकमे प्रिय छथि; जाहिमे– विभूति आनन्द, शैलेन्द्र आनन्द, प्रदीप बिहारी, सुष्मिता पाठक आदिक नाम प्रमुखतासँ लेल जा सकैत अछि। कथाक रचनाक लेल अथवा साहित्यक कोनो विधाक रचनाक लेल आवश्यक छैक जे साहित्यक मूल उद्देश्य स्पष्ट होअए। सामाजिक विश्लेषणक आधार फरिच्छ होअए। अशोक एहि सन्दर्भमे लिखलनि अछि–

''किछु लोक स्वायत्त साहित्य–संसारमे रमैत छथि। ई महानुभावलोकनि प्रायशः ओहि परम्पराक विकास थिका जे धुपकाठी लेसि, गोबरसँ नीपि, आसनपर बैसि साहित्य–साधना करैत छल। जिनकर चित्तमे साहित्यक मूल उद्देश्य 'स्वान्तः सुखाय' रहय। एहि साहित्य–लोकक निवासीलोकनिकेँ ई नहि सोहाइत छनि जे कियो हुनकर कर्मकेँ उपादान कहय आ कृति के वस्तु। मुदा, एहि महानुभ‌ावलोकनिक कल्पित प्रभामंडलकेँ हटाक' समाजमे सात्यिक स्थितिक विश्लेषण हेबाक चाही।''[3]

अनेको विद्वानलोकनिक कहब छनि जे 'साहित्य समाजक दर्पण थिक।' जँ से ठीके दर्पणक स्वरूप साहित्यकेँ देखैत छी तँ ओहिमे समाजक विसंगति, बुराइ आ अनगढ़पन तँ देखेने करत, संगहि समाजमे व्याप्त समस्याक खोज सेहो करत साहित्य। साहित्य आ समाज एक–दोसराक पूरक होइत अछि। समाजमे घटित प्रत्येक घटनाक चित्रण साहित्येमे भेटैत अछि। अशोकक कथामे साहित्यिक परिवेश आ उपस्थित समाजक बहुत सूक्ष्मतासँ चित्रण होइत अछि।

अशोकक कथा–साहित्यक परिवेश एवं समाज

अशोक मैथिली श्रेष्ठ कथाकारक मान्यता सहजहिँ नहि प्राप्त कयलनि अछि। ओ जखन कथा लिखब शुरू करैत छथि तँ कोना कथाक दुनियाँमे विचरण करैत छथि, कोना परिवेशक निर्माण करैत छथि, केहन समाज देखैत दथि आ कोना ओकरा अपन कथाक अनुकूल निर्मित करैत छथि, तकरा बुझबाक लेल डॉ. तारानन्द वियोगीक एहि कथनसँ प्रारम्भ करी–

''अशोक कोनो कथा शुरू करैत छथि आ ओकरा संग जीयब शुरू क' दैत छथि। छओ–छओ मास अपन पात्र सभक संग बनल रहैत छथि। लम्बा–लम्बा बहस होइत अछि। पसन्द–नापसन्द पर रग्गड़ चलैत अछि। कखनो ई ऊपर तँ कखनो क्यो आर नीचाँ मित्रलोकनिक राय–विचारक सत्यापन पात्र सभसँ कराबै छथि।[4]

साहित्यमे वएह कथा कालजयी अथवा दीर्घजीवी भ' सकैत अछि जकर पात्र, समाज आ परिवेशमे विश्वसनीयता हएत। सामाजिक बुनावटिक अनुरूप परिवेशक निर्माण होइत अछि आ परिवेशक अनुकूल पात्र तथा समाजक। डॉ. तारानन्द वियोगी अशोकक सन्दर्भमे जे एकटा श्रेयक प्रस्तुत कयलनि अछि, से कोनो कथा–लेखकक लेल ध्यान देबा योग्य विषय थिक। लेखक जाहि समाजमे रहैत अछि, ओकर सांस्कृतिक–मूल्य कतेक बाँचल छैक, अथवा क्षरण होइत सांस्कृतिक मूल्यकेँ कोना बचाओल जाय। लेखक जाहि समाजक चित्रण करैत अछि, तकरा लेल उपयोगी कोन वस्तु छैक। एहि दुरुह विषयकेँ लेखक कोना चित्रित करैत अछि, तकरा डॉ. तारानन्द वियोगीक विश्लेषणक आधारपर देखल जाय–

''एक बेर की भेलै जे हुनकर एकटा डॉक्टर, जे टाका कमबै लेल जबानिएक दिनमे लन्दन गेल छलाह, झुलझुल बूढ़ भ'क' आ अफरजात टाका जमा क' क' गाम घुरला। गाममे जे ओ घुरल छला से असलमे मरै लेल घुरल छला– पुरातन संस्कार हृदयमे छलनि जे मिथिला आबिक' मृत्यु हो, तँ बात जमै छै। किछु दिन डाक्टर गाममे रहलाह आ ओ देखलनि जे मरबामे एखन देरी छै तँ हुनकर मोनमे एलनि जे गाममे एकटा भव्य मन्दिर बनबाओल जाय। कमी की छलनि, होअए लागल तैयारी।''[5]

वियोगी जीक उपर्युक्त कथनसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे अशोक जीक लेल सामाजिक परिवेशमे मन्दिरक खगता अथवा मन्दिरक लेल श्रद्धा–भाव अधिक छैक। ई कथाक लेल परिवेश निर्माण भेलैक। खूब धूमधामसँ भव्य मन्दिरक निर्माण होइतय, गामक लोक डाक्टर साहेबक लेल दासो दास रहितय, मुदा ई परिवेशक निर्माण अशोकक लेल ओतबा उत्कृष्ट नहि छलनि, जाहि परिवेश–निर्माण, पागक गढ़नि आ समाजक उपस्थितिक चित्राणक लेल ओ ख्यात छथि। तखन, एहि कथा (डैडी गाम नामसँ संग्रहमे प्रकाशित)मे डाक्टर साहेबक हृदय–परिवर्तनकेँ अशोक कोना रेखांकित क' परिवेश–निर्माण कयलनि ताहि मादें वियोगी जी लिखलनि अछि–

''मुदा, तीन–चारि मासक बाद एक दिन अशोकसँ भेंट भेल तँ कहय लगला– जनै छियै? डाक्टर आब अपन विचार बदलि लेलनि अछि। आब ओ मन्दिर नहि बनबौता, अस्पताल बनबौता। हुनकर बेटा सब सेहो यूरोपसँ एलनि अछि। सभ क्यो हुनका सपोर्ट क' रहल छनि । ग्रामीण लोकनिक सेहो सहयोग भेटि रहल छनि।''[6]

डॉ. तारानन्द वियोगी जाहि तरहेँ अशोकक कथक रचना–प्रक्रियाक जनतब विस्तारसँ देलनि अछि, ताहिसँ ई साफ–साफ दृष्टिगा.

ेचर होइत अछि जे एकटा साकांक्ष कथाकार कोना समाजक खगता आ ओकरा मनोवृत्तिक अनुकूल परिवेशक निर्माण करैत अछि। एकटा रिटायर्ड डाक्टरक कृति 'मन्दिर निर्माण' ओतेक प्रासंगिक तँ किन्हुँ नहि हेतैक, जतेक एकटा नीक 'अस्पतलाक निर्माण'। गाम–समाजके ँ अस्पतालक खगता अधिक छैक, से कथाकार अपन पात्रके ँ मनोवैज्ञानिकताक संग विचार परिवर्तित करौलनि। अशोक मैथिली साहित्यमे एकटा विलक्षण कथाकारक रूपमे जे प्रतिष्ठापित छथि, तकरा लेल हुनक सुनियोजित योजना छनि। अशोक स्वयं मानैत छथि–

''वर्तमान समाज आ मैथिली साहित्यक सम्बन्ध समाजक आर्थिक–सांस्कृतिक विकासपर टिकल अछि। आर्थिक विकासेक संग सांस्कृतिक विकास सेहो जुड़ल अछि। जाहि समाजक आर्थिक–सामाजिक संरचना मजबूत छैक, जत' शिक्षा छैक, ओत' साहित्य सेहो विकसित अछि। एक–दोसराक बीच सम्बन्ध बढ़ि रहल छैक। मुदा, जतय आर्थिक सामाजिक पिछड़ापन छैक, ओतय जनभाषाक साहित्यक स्थिति नीक नहि अछि।''[7]

मैथिली कथा–लेखनमे उत्तरोत्तर विकासक प्रक्रिया जारी अछि। कथालेखनक आरम्भिक कालमे लिखित कथा सभक शिल्पके ँ देखल जाय तँ ओहिमे घटनाक बहुलता आ वर्णनात्मकताक आधिक्य अछि। तहिना, तकरा बादक कथाकार लोकनिक कथामे चरित्र–चित्रणपर अधिक जोर देल गेल अछि। एहि क्रममे कथाकारलोकनि पात्रक मनोभाव, प्रकृति, आदर्श आ उद्देश्यके ँ सम्पूर्ण रूपे ँ ताहि तरहे ँ प्रस्तुत करबाक प्रयास कयलनि अछि जे पाठक–वर्गक मन–मस्तिष्कपर नीक जकाँ खचित भ' जानि। संवादक महत्ताके ँ सेहो कथाकारलोकनि महत्व देलनि अछि। मैथिली कथा–साहित्यक आधुनिक कथाकारमे अशोकक नाम ओहन कथाकारक रूपमे लेल जाइत अछि, जिनक कथाक शिल्प कथाके ँ मैथिली कथा होयबाक परिचिति प्रदान करैत अछि। दृष्टिकोण प्रगतिवादी आ सामाजिक यथार्थक उपस्थापन बेजोड़ रहैत अछि। समाजमे विद्यमान अनेको एहन कुरीति–कुसंस्कारके ँ लक्षित क' अशोक व्यंग्य करैत छथि । आन्से, बहुत मारक व्यंग्य! अशोकक कथामे नारीक प्रति सामाजिक व्यवहार सेहो रेखांकित भेल अछि । एहि प्रसंग केदार काननक वाक्य जे डॉ. कुमारी अमृता चौधरी अपन पोथी 'मैथिली कथा ओ नारी'मे उद्धृत कयने छथि, तकरा देखल जाय–

''अशोकक कथा–जगत एकदम फराक आ मौलिक अछि। नारीक प्रति भोगवादी दृष्टिके ँ लक्ष्य करैत ओ अनेक कथा लिखलनि अछि, जे अपन मूलमे व्यंग्यक अचूक तागतिसँ लैस अछि। आधुनिक जीवन–स्थिति आ नैतिक मूल्यक बीच बढ़ैत जाइत दूरीके ँ अशोक बहुत गम्भीरतासँ चित्रित कयलनि अछि। हुनक एहन कथ सभमे निस्संगता आ शून्यता–बोधक स्थिति बनल रहैत अछि।''[8]

अशोकक कथामे ओहन समाज प्रमुखतासँ दृष्टिगोचर होइत अछि जे समाजमे अपन छवि किछु आर प्रचारित–प्रकाशित करैत अछि, मुदा मूलभाव किछु अन्ये रहैत छैक। हिनक कथा–लेखनमे मिथिलाक खोज प्रमुखतासँ रहैत अछि। मिथिलाक अस्तित्वक चिनताकेँ खोज–खबरि लैत डॉ. तारानन्द वियोगी लिखलनि अछि–

''मिथिलाके ँ ओ पूरे व्यापकता संग अपन रचनामे उठबैत छथि। मिथिलाक पर्यावरण, ओकर इतिहास, ओकर सांस्कृतिक आयाम सभके ँ पूरे सज–धज के संग हुनकर रचनामे उतरैत अछि। अशोकक विशिष्टता ई छियनि जे एहि सभ कथूके ँ ओ एक एहन विशेष लयमे प्रस्तुत करैत छथि जकर आरम्भ तँ जरूरे अतीतक तीत–मधुर व्याख्यानसँ होइछ, मुदा जकर अन्त निश्चित रूपसँ प्रगतिशील मूल्य आ जन–सरोकारक पक्षमे आबिक' होइत अछि।''[9]

मैथिली साहित्यमे जखन प्रारम्भिक दौरमे कथा लिखल गेल तँ ओकरा मैथिली कथा मात्र एहि दुआरे मानल गेल जे ओकर भाषा मैथिली छलैक। ई परिधि आगाँ चलिक' विस्तारित भेल। आब मैथिली कथा, मैथिलीक मात्र नहि सम्पूर्ण मानव समुदायके ँ लक्ष्य क' लिखल जाइत अछि। अशोकक कथा लेखनक ई विशिष्टता हुनका आधुनिक पीढ़ीक सजग आ तटस्थ लेखकक रूपमे रेखांकित करैत अछि। अशोकक रचना–प्रक्रिया एवं कथा–परिवेशक मादें मोहन भारद्वाज लिखलनि अछि– ''अशोक विकासमे विश्वास रखैत छथि। मनुक्खक विकास हुनकर अभीष्ट छनि। किन्तु, ओ विकासके ँ पुनरावृत्तिक रूपमे नहि देखैत छथि। विपरीत तत्वक एकताक रूपमे विकासकेँ देखब हुनक विशेषता छनि। इएह कारण अछि जे अशोक मैथिल समाजक, आ ओहि बहाने सम्पूर्ण मानव समुदायक, कार्यकलापमे निहित अनतरविरोधी विन्दुके ँ कथाक विषय बनबैत छथि आ ओकरा एहि रूपमे प्रस्तुत करैत छथि जाहिसँ ओकर आत्मनिर्भरता तथा संघर्ष देखार भ' जाय।''[10]

कथाक रचनाक लेल परिवेशक उत्तम संरचना ओतबे आवश्यक अछि, जतेक एकटा नाट्य–कलाकारक लेल रूप–सज्जा। केहनो भूमिकाक निर्वाह करयवला पात्र अपन वस्त्र–विन्यास एवं रूप–सज्जाक बलपर दर्शकके ँ अपना दिस सावधानीसँ आकर्षित क' लैत अछि । तहिना कथा–लेखनमे परिवेशक निर्माण कथाक पाठकके ँ अपन व्यामोहमे बान्हि लैत अछि। अशोकक कथाक परिवेशक ई नमूना 'मातबर' कथासँ देखल जाय–

''सूर्य डूबि गेल छल। अन्हार पसरि गेल छलै। बिजली दू दिनसँ निपत्ता रहय। लोक कहै छल– भयंकर ब्रेकडाउन भ' गेलेक अछि। ब्रेकडाउन होइ कि सिगनल डाउन आब महराज ओहिठाम पहुँचबाक बेर भेल जाइत छलैक।''[11]

अशोकक कथा–लेखनक एक विशिष्ट तत्त्व थिक जे ओ कोनो कथाक रचना एहि लेल मात्र नहि कयलनि, जे एकटा कथा लिखबाक चाही। ओ जतेक कथा लिखलनि अछि से मिथिलाक खोजक हेतु, अन्वेषण करबाक हेतु आ नव बाट प्रशस्तिक हेतु। एहि

प्रयासक हेतु अशोक मिथिलासँ बाहरक परिवेशकेँ गमलनि अछि। 'मिथिलासँ बाहर रहिक' मिथिलाक लोक मिथिलाक मादें की सोचैत अछि, तकर सूक्ष्म अन्वेषण कयलनि अछि। अशोकक कथाक विशिष्टताक लेल प्रभावी तत्वक विवरण प्रस्तुत करैत डॉ. तारानन्द वियोगी लिखलनि अछि–

''अशोकक कथा–साहित्यक एक विशिष्ट महतव आरो सन्दर्भमे अछि। सभ गोटे जनै छी जे मिथिलाक समाज बहुतो दिनसँ बन्द समाज रहल अछि। जँ कतहु कोनो दिस कनेको खुलापन पाओल जाइतो हो तँ ओकरा धृव्य आ निषेध्य बताक' बन्द करबाक प्रबल प्रयास जारी रहल अछि। प्रश्न अछि जे के बन्द कयलनि एहि मिथिला–समाजकेँ? के छलाह ओ लोक सभ? की छलनि हुनका लोकनिक सिद्धान्त? ओ सिद्धान्त सभ भनहि कोन्नो शास्त्रसँ लेल गेल होउ, आखिर हुनका लोकनिक जीवन–शैली, चिन्तन–प्रणाली की छलनि? ओ लोकनि अपना हिससाक जीवन कोनो जीबै छलाह? कोन अन्तर्विरोध छलनि हुनका सभक जँ छलनि तँ?''[12]

वियोगीजी उपर्युक्त उद्धरणकेँ देखिक' ई बात तँ स्पष्ट अछि जे एकटा कथाकारक रूपमे अशोकक चिन्ता की छनि ! आजादीक पचहत्तरि वर्ष बीति गेलाक उपरान्तो मिथिला आजुक परिदृश्यमे कतय अछि? आम जनताक समस्या ओकर लेखक लिखैत अछि, अथवा नहि? आ कि आधुनिक फैशन जकाँ लेखनकेँ सेहो लेखक लोकनि 'चलताउ' बना लेलनि अछि? अशोकक कथामे यथार्थ आ संघर्षक अनेक आयाम भेटैत अछि। संघर्षक मूल तत्व अन्तर्विरोध होइत अछि आ अशोकक कथामे अनतर्विरोध पकड़ बहुत सूक्ष्मतासँ भेटैत अछि। हिनक कथा परिधि बहुत विस्तारि अछि। एहि सन्दर्भमे मोहन भारद्वाज लिखलनि अछि–

''अशोकक कथाक फलक बहुत विस्तृत अछि। नेताजीक कोठासँ हाकिमक औंठा धरि। गामक श्राद्धसँ शहरक विधवा धरि। किन्तु अशोकक विशेषता समाजिक यथार्थकेँ बिटियाक' रखबे धरि सीमित नहि अछि। असलमे ओ समाजक ओहि नाड़ीकेँ पकड़ैत छथि जे ओकर जीवन्ततताक प्रमाण दैत अछि।''[13]

मैथिलीक समकालीन कथाकारमे अशोकक महत्व लेखनक विशिष्टताक कारणेँ छनि। कोनो वैश्विक परिदृश्य आ घटनाकेँ मिथिलासँ जोड़ब, ओकर मैथिलत्वकेँ उजागर करब, आ सार्वभौमिकताकेँ प्रमाणित करब हिनक प्रमुख ध्येय आ औजार छनि। हिनक कथाक बुनावटि मैथिल होइत अछि, सुगन्धि सेहो मैथिल होइत अछि। खिसक्कड़ बनिक' कथा कहबाक कला हिनक बेजोड़ छनि जे मैथिली साहित्यक लेल विरल सेहो अछि। पहिने गाम–घरमे 'खिसक्कड़' होइत छल। ओ 'खिसक्कड़' बहुत लोकप्रिय रहैत छल । ओकरा दूरा–दरबज्जापर लोकक जुटान एहि लेल मात्र होइत छल जे ओ सभा–गोष्ठीक मध्य खिस्सा सुनबैत छल। ओ अपन बाचन–क्षमतासँ स्रोताकेँ बान्हिक' रखैत छल। सएह क्षमता अशोकक कथा–लेखनमे छनि। ई अपन पाठककेँ कथाक 'जाल'मे लेपटा लैत छथि। मैथिलीक अनेको लेखक लोकनिक मानव छनि जे अशोकक कथा कहबाक ढंग आ भाषा खाँटी मैथिल खिसक्कड़ वला होइत छनि जे पाठककेँ अपना मोहपाशमे गछारि लैत अछि। ई अद्भुत कला, अशोकक कथाकेँ दोबर आकर्षक बना दैत अछि। हिनक कथाक मोद मोहन भारद्वाज लिखलनि अछि–

''अशोकक कथा शिल्पक प्रमुख विशेषता, जे ओकरा मैथिलीक कथा बनबैत अछि, से थिक यथार्थक विस्तृत वर्णन। हमसभ देखि चुकल छी जे प्रगतिवादी दृष्टिकोणसँ सामाजिक यथार्थक उपस्थापन हिनक कथाक मुख्य विशेषता थिक। प्रगतिवादी कथाकार विपअ वर्गक कथा लिखबाक क्रममे सम्पन्न वर्गक यथार्थकेँ बुझबाक प्रयास नहि करैत छथि। फलतः हुनक प्रस्तुति एकांगी भ' जाइत अछि। अशोकक कथा एहि सीमासँ मुक्त अछि। ओ सामाजिक यथार्थकेँ सम्पूर्णतामे जनैत छथि, तेँ कथामे जे जत' जरूरत होइत छैक तकरा विस्तारसँ रखैत छथि।''[14]

मिथिलाक सामाजिक बुनावट अद्भुत अछि। एकर सांस्कृतिक आ सामाजिक पक्षक मूल्यांकन सूक्ष्मतापूर्वक कयलापर देखबामे आओत जे एतय जाति–धर्मक बन्धन कहियो ततेक मजबूत नहि रहल अछि, जतेक राजनीतिक रूपे देखाओल जाइत अछि। एतय जिनका आथ्रिक सम्पन्नता छनि तँ राजनैतिक संरक्षण सेहो हुनके प्राप्त छनि। आर्थिक पिछड़ल लोककेँ ने कियो देखयवला ने सुनयवला अशोकक कथामे एहि तरहक वर्गकेँ सामाजिक पटलपर विस्तार भेटलैक अछि। ओ ईमानदारीपूर्वक लिखलनि अछि जे सामाजिक एहन तरहक परिवेशक निर्माणमे के दोषी अछि। एहि सन्दर्भमे डॉ. तारानन्द वियोगी अपन पोथी 'बहुवचन'मे लिखलनि अछि–

''ईमानदारी अशोकक स्थायी–भाव छियनि– से चाहे हुनकर कार्य व्यवहारकेँ देखू अथवा हुनक लेखनकेँ। ओ पंजी–व्यवस्थापर कथा लिखिन अछि। अभिजात–परम्परा सभपर लिखलनि अछि। सम्भ्रान्त अस्मितासभपर कलम चलौलनि अछि। मुदा, हुनक कथामे ई समस्त भव्य–भाव्यलोकनि खलनायक देखार पड़ैत छथि। नायक जँ क्यो अछि तँ से थिक– स्त्री, बच्चा आ श्रमजीवी शूद्र। यथार्थ थिक जे ई तीनू मिथिलाक दलित–संवर्ग थिक।''[15]

अशोकक कथामे ओहि वर्गक बात भेल अछि, जकरा अधिकारक हनन भेल छैक। वियोगी जीक कथनसँ जोड़िक' आगाँक परिदृश्य देखू तँ स्पष्ट होइत अछि जे अशोकक पात्र–नारी, बच्चा आ श्रमजीवी वर्ग उचिते छनि। एकरे सभक अधिकारक संग तँ छीना–झपटी भेलैक अछि। जे सामर्थ्यशाली प्रभुत्वक लोक एहि वर्गकेँ अपन 'वस्तु' बुझैत छल, तकरे तँ आजुक परिस्थितिमे बिनबिन्नी जकाँ लगैत छैक। एहि सन्दर्भमे अशोक स्वयं अपन कथा–संग्रह 'ओहि राति भोर'क भूमिकामे लिखलनि अछि–

''नीच विचारवला पैघ लोकक विरुद्ध उच्च विचारवला छोट लोकक सभक एकजुटता अपेक्षित अछि। विडम्बना अछि जे उच्च विचारवला छोट लोकसभ बहुमतमे अछि, मुदा मौन अछि। एहि बहुमतक सक्रियता एवं मौन–भंगेसँ लोक साबूत बचि सकत।''[16]

उपरोक्त अनेको दृष्टान्त आ कथा लेखनक सामाजिक, राजनैतिक परिवेशक आधारकेँ पुष्टि दैत, अनेको विद्वानक मूल्यांकनक प्रमाणसँ ई तथ्य तँ प्रमाणित अछि जे अशोक यथार्थवादी रचनाकार छथि, मुदा समाजक वर्गीय व्यवस्थासँ उपजल मानसिकताकेँ सेहो ओ यथार्थ मानलनि अछि। अशोकजी एहि अवधारणासँ शत–प्रतिशत सहमत छथि जे जाति धर्मक मानसिकता विकासक विरोधी तथ्व थिक, मुदा एहू बातसँ अपनाकेँ फराक नहि मानैत छथि जे जातीय आ धार्मिक अवधारणा एहि समाजक यथार्थ अछि। आ समस्त सामाजिक अध्ययन मूल्यांकनेक आधारपर ओ कथाक परिवेशक निर्मिति करैत छथि।

अशोकक कथाक समाज

समाज ओ केन्द्रीय पटल थिक जतय पात्रक निर्माण होइत अछि। परिवेशक निर्माणक लेल समाज जतबे जवाबदेह अछि ततबे पात्राक उचित–अनुचित स्वभावक लेल। समाज एहन इकाई थिक जे केहनो बिगड़ल परिस्थितिकेँ अपन भीतर समाहित क' लैत अछि। परिस्थिति कतबो प्रतिकूल होअए समाजकेँ ओकरा सहेजबाक–समेटबाक सामर्थ्य छैक। आ, परिस्थिति केहनो अनुकूल होअए, समाज चाहय तँ लहका देत। कोनो वैचारिक–व्यक्तित्वकेँ एकभगाह बना देत, बताह बना देत। आ, समाज चाहय तँ केहनो टूटल, हारल–थ. ाकल, बहिष्कृत व्यक्तिकेँ समाजक मुख्य–धारामे सन्निहित क' लेत। मिथिलामे अदौकालसँ एकटा लोकोक्ति प्रसिद्ध छैक– 'सबसे बड़ा समाज'। तेँ लेखकक लेल सामाजिक यथार्थकेँ चित्रित करब अनिवार्य होइत अछि। एहिक्षेत्रमे अनेको लेखक कर्मरत रहलाह अछि, मुदा एतय हमरा अशोकक कथामे वर्णित समाजक प्रमुखतासँ चर्च करबाक अछि। सामाजिक यथार्थकेँ केन्द्रीय–भावमे रखैत डॉ. शिवशंकर श्रीनिवास अपन पोथी 'विश्लेषण'मे लिखलनि अछि–

''मैथिलीमे सामाजिक यथार्थक एकसँ एक विशिष्ट कथा लिखल गेल। मुदा तैयो सामाजिक चेतनाक कथा बहुत कम लिखल गेल। वस्तुतः कोनो समाजमे सामाजिक चेतना तखने आबि सकल, जखन समाज प्रतिगामी संस्कारके तोड़ि सभक बुत्ता जमा क' सकल। जाधरि भाग्यवादी सोच जमल रहत, आर्थिक विसंगतिक लड़ाइकेँ आगू बढ़ेबाक लेल सहज स्वभाव अपनाओल जायत, ताधरि विसंगतिसँ मुक्ति असम्भव अछि।''[17]

अशोकक कथामे पात्रकेँ विसंगतिसँ मुक्तिक प्रबल प्रयास भेल अछि। ओना तँ अशोकक अनेको कथामे उपर्युक्त परिस्थिति चित्रांकित अछि, मुदा हिनक एक प्रसिद्ध कथा 'राँड़' अछि, जाहिमे सामाजिक विसंगतिकेँ तोड़बाक जे स्वधान भेल अछि से समस्त साहित्य–जगतक मध्य चर्चित अछि। कथाकारक मत स्पष्ट छनि जे समाजमे पुरुषे जकाँ स्त्री सेहो जीबथि । एकरा लेल 'राँड़' कथाक माध्यमे एकटा 'मामी' चरित्रकेँ देखौलनि अछ। कमाल बात ई थिक जे 'मामी' पात्रक 'भगिन' एकटा प्रगतिकामी युवा छथि, मुदा जखन अपन सोझाँ विधवा भेलि मामीकेँ सामान्य बगय–बानिमे देखैत छथि तँ आहत होइत छथि। एहि बेरमे हुनक प्रगतिवादिता चोन्हरा जाइत छथि। एकटा पुरुषक जखन पत्नीक देहान्त भ' जाइत छैक आ ओ 'विधुर' भ' जाइत अछि तँ ओकरा जीवनमे कोनो परिवर्तन नहि हेतैक। जहिना पहिने वस्त्र पहिरैत छल तहिना पहिरत, जएह आहार–विहार छलैक, सएह रहतै, मुदा एकटा 'विधवा' स्त्रीक लेल अलग सामाजिक नियम। एकटा 'विधवा' स्त्रीक पहिरन–ओढ़न आ खान–पान सभटा निर्धारित अछि। ओ शृंगार नहि करतीह, भोजन–भातक प्रकर धरि वर्जित। ई खाउ, ओ नहि खाउ! कथाकार अशोक एहि दुरंगा सामाजिक व्यवस्थाकेँ उपयुक्त नहि मानैत छथि। ई स्त्री–पुरुषक बीच जे द्वैध अछि तकरा कथाक माध्यमे समाजक समक्ष अनैत छथि आ एकरा टुटबाक अपेक्षा रखैत छथि। 'राँड़' कथामे समाज द्वारा निर्मित एकटा विधवाक स्वरूपक चित्रण ओ हू–बहू कयलनि अछि। एहि सामाजिक विडम्बनाक चित्रण अशोक जी एहि तरहेँ कयलनि अछि–

''पतिक मृत्युक बाद सभ स्त्री विधवा भ' जाइत अछि। उज्जर नूआ पहिरि लैत अछि। सिंउथ धो लैत अछि। चूड़ी फोड़ि लैत अछि। सौभाग्य सभ चेन्ह मेटा लैत अछि। अदौसँ ई परम्परा कायम छैक। अनकर धूल नहि खेबाक, माछ–मांस छोड़ि देबाक, अपन देह साधि लेबाक, सख–सेहन्ता जाँति लेबाक कठोर बन्धनमे कुहरैत रहबाक लेल विवश।''[18]

समाजमे विभिन्न तरहक लोक बसैत अछि। किछु नीक लोक तँ किछु अधलाहो लोक। के नीक छथि आ के अधलाह तकर निर्णय करब तँ प्रत्येक व्यक्तिक अपन दृष्टिकोण भ' सकैत अछि, मुदा नीक आ अधलाह दुनू प्रकारक व्यक्तिकेँ मिलाइएक' समाजक निर्माण होइत अछि। एकटा लेखकक हृदयमे एकटा टीस उठैत छैक जे पढ़ल लिखल समाजमे तँ कमसँ कम कुरीति नहि पसरल रहय । पढ़ल–लिखल लोककेँ तँ समाजमे खूब हिलि–मिलिक' रहबाक चाही। समाजसँ तँ कखनो नहि कटबाक चाही। ओकरामे चेतना एतेक जाग्रत तँ अवश्य भ' जाइत छैक जे ओ कुरीतिकेँ बदलिक' सु–संस्कार पसारि सकय।

अशोकक कथामे सामाजिक अन्तर्विरोध बहुत बारीकीसँ अबैत अछि। हिनक कथा–संग्रह 'मातबर'क शीर्षक कथामे सेहो समाजक एही अन्तर्द्वन्द्वकेँ पकड़ल जा सकैत अछि। देखल जाय तँ आजुक पूंजीवादी युगमे 'मातबर' बनबाक होड़ लागल अछि। घरसँ ल' क'

बाहर धरि, गामसँ ल' क' शहर धरि, राज्य सँ ल' क' देश आ देशसँ ल' क' विश्व धरि सभ 'मातबर' बनबाक अंधदौड़मे अपस्याँत अछि। 'मातबर' कथा एही तरहक सामाजिक यथार्थक व्याख्या थिक। जेना कि अक्सरहाँ देखल जाइत अछि जे समाजमे एकटा 'मोट गरद. निवला' लोकक आगाँ–पाछाँ 'लटल–बुड़ल' कतेको लोक आगाँ–पाछाँ करैत रहैत अछि। एहन जे 'मोट गरदनिवला' लोक समाजमे रहैत अछि, तकर स्वभाव नीक लोकक लेल प्रतिरोधी अवश्ये देखल जाइत अछि। अन्तर्विरोध अधलाह लोकक बीच सेहो रहैत छैक। 'मातबर' कथामे अशोक अधलाह लोकक बीचक अन्तर्विरोधकेँ तँ उजागर करबे कयलनि अछि, ओकर अन्तर–निर्भरताकेँ सेहो देखार कयलनि अछि। देखल जाय तँ सामाजिक विकासक प्रमुख तत्व इएह अन्तर्द्वन्द्व थिक। अशोकक कथामे मिथिलाक जे समाज चित्रित भेल अछि ताहिमे अभिजन वर्चस्वक समाज खूब ऐल–फैलसँ देखाइत अछि। एहि समाजक मादें अशोक 'मैथिल आँखि' पोथीमे लिखलनि अछि–

''प्रारम्भमे विद्यापति गीतक भाषा–विवाद मिथिलाक बुद्धिजीवकेँ मैथिली दिस तकबाक लेल उसकौलक। मैथिली भाषाक अस्तित्व रक्षा चिन्ता सँ आयल। भाषाक अस्मिताक खोजमे संस्कृति दिस ध्यान गेल। संस्कृतिकेँ तकेत काल समाज मोन पड़ल। समाजक स्थिति आ समस्याकेँ सुधारबाक आवश्यकताक अनुभव भेल। मुदा, ई समाज अभिजन वर्चस्वक समाज रहय। जे अपन गौरव प्राप्तिक चेष्टामे जाग्रत भेल।''[19]

कथा एकटा एहन विधा थिक जाहि माध्यमसँ सामाजिक मंगलकामनामे बाधक अनेको अमंगलकारी तत्वक विनाश करब उचित होइत अछि। कथा एहन अमोध अस्त्र थिक जाहिसँ विघटनकारी तत्वपर प्रहार एवं तकर निराकरण सहज–सुलभ होइत अछि। कथा लोकरंजक एवं लोक मंगलकारी तत्वसँ सराबोर रहैत अछि, जाहि कारणेँ पाठक अथवा स्रोताकेँ सहजहिं अपना वशमे क' लैत अछि। आ तेँ अशोक जखन कथा लिखैत छथि तँ ओकर परिवेश आ समाजक निर्माण एहन 'चौगुण' बान्हसँ करैत छथि जे ओ केहनो अन्ह. र–बिहाड़िमे टससँ–मस नहि होअए। 'मातवर' कथा–संग्रहक कथा 'कोठा' कथाक सामाजिक चित्रणकेँ देखल जाय–

''चारूकात खोपड़ी, फूस घर आ खपड़ल सभहक बीच ग्रामीण विकास मंत्री रामलाल मण्डल आलीशान, भव्य कोठा। संगमरमरक फर्श। चाननके केबाड़ी इटालियन टाइल्स। सापक विशाल हॉल। शीशा आ रोशनीसँ लगभग करैत। राशि–राशि के रंग–बिरंगक तीन सय पैंसठि साप। हरहरासँ ल' क' अजगर धरि। शीशामे चमकैत ससरैत साप। अद्भुत।''[20]

अशोकक कथामे अक्सरहाँ देखबामे अबैत अछि जे ओ अपन अधिकांश कथा वर्तमानसँ शुरू करैत छथि आ पृष्ठभूमिक रचनाक लेल 'फ्लैशबैक'क सहायता लैत छथि। अशोकक कथाक ई एकटा अपूर्व आ विरल स्वरूप होइत अछि जे ओ पुनः 'फ्लैशबैक'सँ वर्तमानमे घुमि अबैत छथि आ तखन कथाक निष्पत्तिकेँ प्राप्त करैत छथि। अशोक आम पाठककेँ ध्यानमे राखिक' कथाक रचना करैत छथि । हिनक कथामे सरल आ पारदर्शी भाषाक प्रयोग मनोरम होइत अछि। अशोकक कथा रचनाक विशिष्टताक मादेँ डॉ. तारानन्द वियोगी 'बहुवचन'मे लिखलनि अछि–

''अशोकक कथा सभमे कथावाचकक ततेक विविधता अछि जे कतोक बेर चकित करैत अछि। कथाक भव्य पृष्ठभूमि रचनामे कथावाचकक चयन हुनका बेस सहयोग करैत रहलनि अछि। कथाक प्लॉट कोन कोणसँ देखल जाय कि ओकर समस्त मार्मिकता साधारणसँ साधारण पाठकोक हृदयमे उतरि जाय, अशोक नीक जकाँ जनैत छथि।''[21]

अशोकक कथा सभमे एकटा नव वायुमंडलक जेना निर्माण होइत अछि। हिनक कथा सभमे राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय चिन्ता सभक सापेक्ष मिथिलाक समस्या आ चिन्ता देखार पड़ैत अछि। भूमंडलीकरण आ बाजारवादक दाउण स्वरूप सभ सेहो हिनक कथामे सद्यः प्रकट होइत अछि। अशोकक कथामे भारतीयताक अस्मिता आ मैथिलत्वक भरमार भेटैत अछि। आजुक एहन जटिल समयमे वर्तमानक देहरिपर ठाढ़ भ' क' परम्पराक सकारात्मक मूल्यकेँ खोजिक निमालि लेबाक क्षमता मैथिलीक श्रेष्ठ कथाकार अशोकमे छनि । एहि तरहक लेखकक आगमनसँ प्रगतिशील चेतनाक विकास क्षिप्रतासँ भेल अछि। आइ जे मैथिली समकालीन कथाक अपन मौलिक चरित्र अभरल अछि, बेहतर जीवन–स्थितिक लेल कथाक संघर्ष सही दिशामे बढ़बाक गति पकड़लक अछि, ताहिमे अशोकक कथा लेखन शैलीक महत्व सर्वाधिक अछि।

Author's Declaration:

The views and contents expressed in this research article are solely those of the author(s). The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible for any errors, ethical misconduct, copyright infringement, defamation, or any legal consequences arising from the content. All legal and moral responsibilities lie solely with the author(s).

सन्दर्भ सूची–

1. रमण, डॉ. रमानन्द, 2020, मैथिली कथाक धाप, अखियासल प्रकाशन, लाल गंज, मधुबनी, पृ. 7

2. अशोक, 2007, वर्तमान समाज आ मैथिली साहित्य, मैथिली आँखि, मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 58
3. तत्रौव, पृ. 58
4. वियोगी, डॉ. तारानन्द, 2015, अशोक कथा–स्वभाव, बहुवचन, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृ. 296
5. तत्रैव, पृ. 296
6. तत्रैव, पृ. 297
7. अशोक, 2007, वर्तमान समाज आ मैथिली साहित्य, मैथिली आँखि, मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 64
8. कानन केदार, डॉ. कुमारी अमृता चौधरी, 2020, मैथिली कथा ओ नारी, नवारम्भ, मधुबनी, पृ. 65
9. वियोगी, डॉ. तारानन्द, 2015, अशोक कथा–स्वभाव, बहुवचन, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृ. 298
10. भारद्वाज, मोहन, 2001, एकसँ एकैस, अशोक, मातबर, सुशील स्मृति, लोहना, पृ. 05
11. अशोक, 2001, मातबर (कथा), सुशील स्मृति, लोहना, पृ. 13
12. वियोगी, डॉ. तारानन्द, 2015, अशोक कथा–स्वभाव, बहुवचन, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृ. 299
13. भारद्वाज, मोहन, 2001, एकसँ एकैस, अशोक, मातबर, सुशील स्मृति, लोहना, पृ. 6
14. तत्रैव,
15. वियोगी, डॉ. तारानन्द, 2015, अशोक कथा–स्वभाव, बहुवचन, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृ. 301
16. अशोक, 1991, भूमिका, ओहि रातिक भोर (कथा–संग्रह), पृ. 7
17. श्रीनिवास, डॉ. शिवशंकर, 2022, विश्लेषण, सिद्धिरस्तु, दिल्ली, पृ. 78
18. अशोक, 2001, मातबर (कथा), सुशील स्मृति, लोहना, पृ. 124
19. अशोक, 2007, वर्तमान समाज आ मैथिली साहित्य, मैथिली आँखि, मैथिली अकादमी, पटना, पृ. 27
20. अशोक, 2001, कोठा (कथा), मातबर, सुशील स्मृति, लोहना, पृ. 33
21. वियोगी, डॉ. तारानन्द, 2015, अशोक कथा–स्वभाव, बहुवचन, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, पृ. 302

Cite this Article-

'डॉ0 श्वेता कुमारी,', 'अशोकक कथा–साहित्यक परिवेश एवं समाज', Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume:1, Issue:04, July-August 2025.
Journal URL- https://www.shodhpith.com/index.html
Published Date- 7 July 2025
DOI-10.64127/Shodhpith.2025v1i4002